वक्तव्य

मनुष्य, आत्माभिव्यंजन की प्रेरणा से अपने आन्तरिक भावों, भावनाओं और अनुभूतियों को अन्य जनों के समक्ष अभिव्यक्त किये बिना नहीं रह सकता। अपनी भावानुभूतियों आदि को न केवल वह व्यक्त ही करता है वरन् दीर्घ समय तक के लिये लिखित रूप में उन्हें सुरक्षित भी रखता है और इस प्रकार वह अपनी इस विचारादि की रक्षित राशि को भावी संतति के लिये छोड़ जाता है। उसकी अजरामर आत्मा की अमरत्वाकांक्षा भी पूर्ण कार्य करती है, उसे प्रचुर प्रेरणा देती है तथा उसे उत्साहित और उत्तेजित भी करती है। इसी के साथ शाश्वत-स्थायी आत्मा की स्वस्थायित्व-स्थापनाकांक्षा भी स्वभावतः पूरा पूरा सहयोग करती है। इस सब कार्य-प्रयत्न-प्रगति में उसे विशेष प्रकार का आनन्द मिलता है— यही आनन्द प्राप्ति की अभिलाषा मनुष्य के समस्त कार्य-कलाप की प्रगति का मूल है।

वास्तव में आनन्द के साथ काल-यापन के लिये 'काव्य' सबसे अच्छा साधन है। इसे न केवल कवि को ही आनन्द मिलता है, वरन् इसके पढ़ने वालों और सुनने वालों को भी वैसा ही आनन्द मिलता है। अन्य कलाओं की रचनाओं से, इसमें कोई भी संदेह नहीं, ऐसा उत्तम आन्तरिक आनन्द नहीं मिलता जैसा काव्य से प्राप्त होता है। काव्य से कल्पना, मन,